हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

राजकिशोर यादव

शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक शिक्षा–संकाय
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी,
इलाहाबाद।

शिक्षा एक व्यापक अवधारणा है जिसके विषय में विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किये है शिक्षा का अर्थ – बालक के मस्तिष्क में केवल ज्ञान भरना ही नहीं है वरन् यह तो बालक में निहित शक्तियों का सर्वोत्तम प्रगटीकरण है। यह जीवन पर्यन्त विकास की प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक व्यवहार में सुधारात्मक परिवर्तन लाया जाता है। यह एक उद्देश्यपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है जिससे मनुष्य सभ्य, सुसंस्कृत, समाजोपयोगी, योग्य नागरिक बनता है। बालक हर समय, हर स्थान पर कुछ न कुछ सीखता रहता है। इस प्रकार वह अपने व्यक्तित्व में विकासोन्मुख परिवर्तन लाता है। वास्तव में शिक्षा ही जीवन है, जीवन ही शिक्षा है।

सामान्यतः विद्यालयी परिवेश में विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति से तात्पर्य है– विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी, व्यवस्था, नियमों, शिक्षकों की आज्ञाओं तथा सामाजिक मानदण्डों के अनुसार आचरण तथा व्यवहार करना एवं उनके अपने अनुचित आचरण तथा व्यवहार पर नियंत्रण रखना। आज्ञापालन (Obedience) तथा आज्ञा का उल्लघंन (Disobedience) दो विपरीतार्थक शब्द है, जिनसे दो विपरीत प्रकार के व्यवहार का बोध होता है। जो विद्यार्थी कुछ विशेष प्रकार की व्यवहारगत विशेषतायें (Certain behavioural characteristics) रखता है उसे आज्ञाकारी विद्यार्थी कहते है तथा जिसे विद्यार्थियों में ये विशेषताएं नही पायी जाती, वह अनाज्ञाकारी विद्यार्थी कहलाता है। आज्ञाकारी विद्यार्थी प्रायः अपने शिक्षकों, बड़े–बुजुर्गों की आज्ञा मानते हैं। वे विद्यालय/कॉलेज के नियमों, व्यवस्थाओं को मानते है। वे अनुशासित होते है। वे नियमित रूप से विद्यालय आते है तथा गृहकार्य करते है। वे शिक्षक के कक्षा में न रहने पर भ्झी स्वयं को किसी कार्य में व्यस्त रखते है। वे नियमित रूप से सभी कालांशों (Periods) में उपस्थित रहते हैं। परीक्षाओं में उनकी निष्पत्ति संतोषजनक होती है तथा वे स्वयं को उपद्रवों, शैतानियों से दूर रखते है। जबकि अनाज्ञाकारी विद्यार्थियों के व्यवहार में उपर्युक्त वर्णित विशेषतायें नहीं पायी जाती है।

आज की विषम परिस्थिति वाले समाज में विद्यार्थियों का गलत आचरण तथा व्यवहार न तो उनके लिये हितकर है और न ही समाज के लिये। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में यह

Scanned with CamScanner

(Disobedience) एक गम्भीर समस्या के रूप में उभर कर आ रह रही है। आज के विद्यार्थी न तो समय पर विद्यालय में आते हैं, न अध्यापकों की आज्ञा पालन करते हैं। कक्षा शिक्षण के दौरान शोर मचाते है, बातचीत करते हैं और शिक्षकों के पढ़ाने में बाधा डालते हैं। कक्षा से पलायन करना, गृहकार्य न करना, कक्षा कार्य न करना, अध्यापन का अपमान करना, अपशब्द कहना, झूठ बोलना, विद्यालयी साज–सज्जा, फर्नीचर का तोड़–फोड़ करना ये सब आम समस्यायें है जो अधिकांश विद्यालयों में आज देखी जा सकती हैं।

शिक्षा का अर्थ – बालक के मस्तिष्क में केवल ज्ञान भरना ही नहीं है वरन् यह तो बालक में निहित शक्तियों का सर्वोत्तम प्रगटीकरण है। यह जीवन पर्यन्त विकास की प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक व्यवहार में सुधारात्मक परिवर्तन लाया जाता है।

सामान्यतः विद्यालयी परिवेश में विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति से तात्पर्य है– विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी, व्यवस्था, नियमों, शिक्षकों की आज्ञाओं तथा सामाजिक मानदण्डों के अनुसार आचरण तथा व्यवहार करना एवं उनके अपने अनुचित आचरण तथा व्यवहार पर नियंत्रण रखना।

आज के विद्यार्थी विद्यालय–वातावरण में अपने आपको असुरक्षित महसूस करते है। विद्यालय द्वारा बनाये गये नियम तथा उन नियमों का पालन करना उन्हें बोझ समान लगता है। अध्यापकों की आज्ञाओं तथा आदेशों का पालन वे भयवश करते हैं। चूंकि अध्यापकों का बालकों के प्रति व्यवहार स्नेह तथा सहानुभूति पूर्ण नहीं है वरन् ईर्ष्या एवं बदले से बदले से परिपूर्ण है, अध्यापकों की आज्ञा का पालन न करने पर विद्यार्थियों का परीक्षाफल ही बिगड़ जाता है। इस भय से भयभीत विद्यार्थियों में अन्दर ही अन्दर आक्रोश पनपता रहता है जिसकी अभिव्यक्ति उग्र रूप में वे शिक्षकों की अवहेलना तथा अनाज्ञा द्वारा प्रदर्शित करते है। वे असामाजिक, अनुचित, अक्षम्य व्यवहार का प्रदर्शन करते है।

समस्या कथन–

हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य रखे हैं:–

1. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम बाल्यावस्था की छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

Scanned with CamScanner

1. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम बाल्यावस्था की छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के चयन हेतु यादृच्छिक विधि से इलाहाबाद के दो उच्च प्राथमिक विद्यालयों को प्रतिदर्श हेतु चुना गया है। हिन्दी माध्यम के एक विद्यालय से 50 विद्यार्थियों (25 छात्र + 25 छात्राओं) को एवं अंग्रेजी माध्यम के एक विद्यालय से 50 विद्यार्थियों (25 छात्र+25 छात्राओं) को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि द्वारा लिया गया है। आँकड़ों के संकलन हेतु सी0एस. मेहता तथा एन. हसनैन (1981) द्वारा निर्मित **Obedient-Disobedient Tendency Scale (ODTS)** नामक प्रमापीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण का प्रयोग किया है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिये मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

H_1 हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में अन्तर है।

H_{01} हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी नं0 (1)

हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात

छात्र समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–अनुपात
हिन्दी माध्यम के छात्र	25	25.8	3.65	1.29
अंग्रेजी माध्यम के छात्र	25	24.5	3.31	

सारणी नं0 1 के अनुसार हिन्दी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों का मध्यमान 25.8 तथा अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों का मध्यमान 24.5 है। दोनों वर्गों के मध्यमान में अन्तर नही है। अतः उनकी आज्ञाकारी प्रवृत्ति समान प्रतीत होती है। प्राप्त टी–अनुपात का मान भी 1. 29 है जो सार्थकता के आवश्यक मान से कम है अतः प्रथम शून्य परिकल्पना हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में अन्तर नहीं होगा, स्वीकृत की जाती है। सारणी देखने पर पता चलता है कि भाषा के अन्तर के कारण छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में प्रभाव नहीं पड़ता है। छात्र चाहे किसी भी भाषायी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करें उसकी आज्ञाकारी प्रवृत्ति पर भाषायी कारक का प्रभाव नहीं पड़ता।

Scanned with CamScanner

H_2 हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में अन्तर है।

H_{02} हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी नं0 (2)

हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात

छात्र समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–अनुपात
हिन्दी माध्यम के छात्र	25	24.66	3.58	0.715
अंग्रेजी माध्यम के छात्र	25	23.84	4.32	

सारणी नं0 2 के अनुसार हिन्दी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं की मध्यमान 24.66 तथा अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं का मध्यमान 23.84 है। अतः सारणी देखने पर पता चलता है कि हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं की मध्यमान में अन्तर नही है। अतः उनकी आज्ञाकारी प्रवृत्ति समान प्रतीत होती है। प्राप्त टी–अनुपात का मान भी 0.715 है जो सार्थकता के आवश्यक मान से कम है अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में अन्तर नहीं होगा, स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार निष्कर्ष से स्पष्ट है कि भाषा के माध्यम का छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति पर प्रभाव नही पड़ता।

H_3 हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में अन्तर है।

H_{03} हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी नं0 (3)

हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात

छात्र समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–अनुपात
हिन्दी माध्यम के छात्र	50	24.42	3.62	1.01
अंग्रेजी माध्यम के छात्र	50	23.62	3.77	

सारणी नं0 3 से स्पष्ट होता है कि हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं के मध्यमान तथा अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों के आज्ञाकारी प्रवृत्ति के मध्यमान में अन्तर नही है। प्राप्त टी–अनुपात 1.01 है सार्थकता के लिये आवश्यक मान से कम है, अर्थात् अन्तर सार्थक नही है। अतः तृतीय शून्य परिकल्पना– ''हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में अन्तर नही होगा।'' 0.01 तथा 0.05 दोनों स्तरों पर स्वीकृत की जाती है।

Scanned with CamScanner

हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम मं शिक्षा का स्तर समान होता है। दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण तथा उस क्षेत्र के परिवेश समान होता है। प्रस्तुत अनुसंधान में एक समान शहरी परिवेश वाले छात्र–छात्राओं का अलग–अलग भाषा माध्यमों में आज्ञाकारी प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है। दोनों भाषा के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की आज्ञाकारी प्रवृत्ति लगभग समान है। सांख्यिकीय विश्लेषण में इनके अन्तर सार्थक नहीं है। अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक भाषा में शिक्षा का स्तर अच्छा तथा विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण, अनुशासन, नियम, व्यवस्था आदि अच्छे है। छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति प्रत्येक भाषा माध्यम में अच्छी है। इसी प्रकार छात्राओं की भी आज्ञाकारी प्रवृत्ति प्रत्येक भाषा माध्यम में अच्छी है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के छात्रों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान आज्ञाकारी प्रवृत्ति है।
2. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम बाल्यावस्था की छात्राओं की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान आज्ञाकारी प्रवृत्ति है।
3. हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की आज्ञाकारी प्रवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों में समान आज्ञाकारी प्रवृत्ति है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों में आज्ञाकारी प्रवृत्ति प्रत्येक भाषा के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों में पायी जाती है। शोधकर्त्ता ने दो भिन्न–भिन्न भाषाओं के बाल्यावस्था के विद्यार्थियों की आज्ञाकारी प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि दोनों भाषाओं के विद्यार्थियों में समान आज्ञाकारी प्रवृति होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. करलिंगर, एफ0एन0 (2004). फाउण्डेशन ऑफ बिहैविरल रिसर्च, देलही, सुरजीत पब्लिकेशन।
2. कार्टर, बी0 गुड (1973). डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन, न्यू देहली, मैक ग्रोहिल बुक कम्पनी।
3. पाठक, पी0डी0 (1982). भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं उसकी समस्यायें, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. सिंह, कर्ण (1996). भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, लखीमपुर, गोविन्द प्रकाशन।
5. संलिग मैन, आर0ए0 (1979). इनसाइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइन्सेज वाल्यूम–पंचदश।

Scanned with CamScanner